शिव परीक्षा।

CALCUTTA:

PRINTED BY C. B. LEWIS, AT THE BAPTIST MISSION PRESS.

1876.

१ छपाई २००० पुस्तक।   दाम २ पाई।

पितापुत्रपवित्रात्मने नमः ॥

शिव परीक्षा।

शिव अर्थात् महादेव कौन है। हिन्दु लोग उस की बड़ी पूजा करते हैं और तुम्हारी स्त्रीआं और लड़किआं निज करके उस पर जल फूल आदि चढ़ाती हैं सो तुम्हारे मनों में यह इच्छा क्यों न आवे कि हम ते सुनें और जानें कि हमारे इष्ट का क्या चरित्र और प्रताप है। हम अब तुम्हारी इच्छा पूरी करने के तुम्हें महादेव का चरित्र जैसे तुम्हारी पुस्तक और पाठक बताते हैं वैसा लिखते हैं

और इस के साथ परमेश्वर का भी ज्ञान तुम्हें बताते हैं चित देके सुनो ॥

दोहा ।

मेरी याही है बिनय पुस्तक पढ़े जो कोय।
कि बहुतेरन को पोथी यह फलदायक होय ॥
अब की बेरा पढ़ो यही कहत मन लाय जान।
औसर जब टल जई है तब ना पइये ज्ञान ॥

पहिले शिव के उत्पन्न होने की बात सुनो।

मत्स्य पुरान में शिव के उत्पन्न होने के बिषय में लिखा है।

श्लोकः। एका मूर्त्तिस्त्रयो भागा ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः।

अर्थात् वह जो एक तत्व है सो त्रिरूप होके ब्रह्मा विष्णु महेश हुआ॥

25 Ja 01

मत्स्य पुरान में तो ऐसा लिखा है परन्तु हिन्दुओं के शास्त्रों में शिव के विषय में नाना प्रकार के बर्णन होते हैं। कइ शास्त्रों में लिखा है कि ईश्वर की शक्ति से तीनों देव उत्पन्न हुए। फिर और शास्त्रों का यह बर्णन है कि शिव सकल देवों का स्वामी बलकि देवताओं का देवता है और इसी कारण महादेव कहलाता है। फिर कहते हैं कि वह अनादि है और उस के न माता न पिता न कुल न जड़ न मूल कभी कुछ हुआ।

योंहीं महादेव की उत्पत्ति के बिषय में भांति भांति के बर्णन होते हैं कि उस का घर कैलास पर्ब्बत के ऊपर था और वह राजा दक्ष की बेटी सती को बिवाह लाया फिर कहते हैं कि वह अति विद्यावान

पण्डित था और तंत्र शास्त्र जो कहलाते हैं उन का वही लिखनेवाला था। फिर कहते हैं कि औषध बिद्या का शास्त्र अर्थात निदान शास्त्र जो उस ही का बनाया हुआ है सो आज लों देखने में आता है। फिर कहते हैं कि राजा दक्ष के जज्ञ करते समय शिव की पत्नी सती जो थी सो जब शिव की निन्दा को सह न सकी तब उस ने अपने को नाश किया इस के पीछे जब शिव अपनी सती के बियोग से अति व्याकुल हो बावले की नाईं घूमता फिरता रहा तब कहते हैं कि दुर्गा मेनका के गर्भ से उत्पन्न होके पार्बती नाम करके प्रगट हुई और हिमालय उस का पिता था सो जब शिव बहुतेरी कठिन तपस्या कर चुका तब पार्बती उस के साथ ब्याही गई। जब शिव ने

पार्बती के साथ ब्याह किया तब उस को साथ ले और सत्ती नाम धर वह बहुत दिन अपने ससुर के घर में टिका परन्तु जब ससुर ने उस की निन्दा किई तब पत्नी और बालकों को साथ ले काशी में जा रहा। शिव के दो पुत्र थे एक का नाम गणेश दूसरे का कार्तिक। शिव सदा कंगाल और निर्धन हो उन ही की जीवका के लिये भीख मांगता फिरता था फिर जब किसी समय में शिव आलसी और निश्चिन्त होकर भीख मांगना छोड़ा तब पार्बती को बड़ी तंगी हुई और इस कारण उन में बहुत से झगड़े भी उठे तौभी जब लों काशी में थे कुछ चैन से रहते थे।

हे पढ़नेवालो मैं जानता हूं कि तुम ने शिव का इतना वृतान्त

सुना होगा और आगे मैं उसके विषय में और बातों का भी बर्णन करूंगा आप लोग कान लगा चित दे सुन लीजिये क्योंकि मेरा यह भरोसा है कि इस पोथी के उपदेश से आप लोगों को बड़ा लाभ होवेगा। ससुर का घर छोड़के और पत्नी बालक साथ लेके शिव काशी में जा रहा उस के वहां रहने से काशी का माहात्म्य वहुत प्रसिद्ध होने लगा क्योंकि कहते हैं कि ब्रह्मा आदि देवते और नार्द इत्यादि ऋषि मुनि अरु और जितने थे सो मुक्ति का आसरा करके महादेव के दर्शन के लिये काशी में आया करते थे सो आजलों हिन्दु लोग कहते हैं कि काशी नगर अति पवित्र और त्राणकर्त्ता है और एक महादेव अर्थात एक डेढ़ हाथ लमबे पत्थर की पूजा से सब

लोगों के अर्थ पूरे किये जायेंगे और जो कोई काशी में मर जाए सो शिव में लीन होके शिव के लोक में बास करेगा। लोग यह भी मानते हैं कि काशी में पहुंचते ही मुक्ति मिलती है जैसा काशी खंड के ३५ अध्याय में लिखा है ॥

श्लोकः । प्राप्य काशीं भवेन्मुक्तोजन्तुर्नान्यत्र कुत्रचित् ।
अतएव हि तत् क्षेत्रं पवित्रमतिचित्रकृत् ॥

अर्थात काशी में जो जीव जन्तु पहुंचता है सो ही निस्तार पाता परन्तु और कहीं नहीं पा सक्ता है और इस निमित्त वह भूमि अति पविच कहलाती है फिर देखो कि काशीखंड के ६ अध्याय में यह भी लिखा है ।

श्लोकः । श्रीशैलशिखरं दृष्ट्वा पुनर्जन्म न विद्यते ।
इदमेव हि सत्यं चेत् किमर्थं काशिरिष्यते ॥

अर्थात काशी की चटान की चोटी को देखकर कोई इस जगत में फिर जन्म न लेगा। जो यह सत्य बात होती तो काशी में जाना भी अवश्य न होता। हे प्यारो सोचो इन दो श्लोकों में लिखा है कि काशी के देखने अथवा उस में रहने से मनुष्य को मुक्ति और पाप से छुटकारा प्राप्त होता है परन्तु काशी ही में ऐसी बुराई और कुकर्म प्रचलित है जिस का बर्णन लाज के मारे कोई नहीं कर सकता है। काशी ही में चोरी और झूठ और छिनाला और मतवालापन बहुत हो रहा है जो तुम जान्ने चाहते हो कि उस नगर में कैसी दुष्टता और महा-

पातक हुआ करता तो किसी काशी के रहनेवाले से बूझो । हाय हाय जो काशी में चोरी छल मतवालापन व्यभिचार इस रीति प्रबल हों क्या कोई ज्ञानवान यह कहेगा कि काशी के देखने वा उस में प्रवेश करने से निस्तार वा मन की शुद्धता प्राप्त हो सक्ती है । जो कहते कि हो सक्ती सो बड़ी भूल की बात कहते हैं इस में कुछ सन्देह नहीं ।

फिर हे पढ़नेवालो यह बिचार करो कि ऐसे भी मूर्ख लोग हैं जो यह कहते हैं कि काशी जी पृथिवी पर नहीं बरन त्रिशूल पर धरी हुई है श्रीर इस कारण भूंचाल से हिलती नहीं है । वाह । हिन्दु लोग कैसे झूठ से प्रसन्न होते हैं । बिचार करो कि सैकड़ों भूंचाल काशी ही में हुए हैं अथवा जो किसी के मन में कुछ सन्देह होवे तो

किसी सच्चे पुरुष से पूछो तो तुम्हें निश्चय होवेगा। ब्राह्मण लोगों के छल छिद्र की बातों को मत मानो परन्तु जो कुछ पढ़ते और सुनते हो पहिले उस बात को परख लो और बिचार करो कि यह बात यथायोग्य है वा बुद्धि के बिरुद्ध है। जब लों हमारी बुद्धि किसी बात के सत्य होने पर साक्षी न दे तब लों उसे न मानना चाहिये। जैसा वेदान्त में लिखा है कि जो बात प्रमाणों से स्पष्ट किई जाती सो ही सिद्ध होती है परन्तु काशी के बिषय में कोई बात प्रत्यक्ष नहीं होती है क्योंकि एक शास्त्र दुसरे शास्त्र का खंडन करता है। एक जगह कहीं लिखा है कि बिना काशी के दर्शन किये मुक्ति नहीं मिलती है। फिर दूसरी पोथी में लिखा है कि कोई तीर्थ गंगा तीर्थ के तुल्य नहीं है।

फिर तीसरे शास्त्र में यह है कि बिना श्रीक्षेत्रा अर्थात जगन्नाथ का दर्शन किये मुक्ति पाना अनहोना है।

तो हे प्यारो सोचो तुम किस शास्त्र को मानोगे जैसा कि काशीखंड के ९४ अध्याय में लिखा है।

श्लोकः। सत्यं सत्यं पुनः सत्यं सत्यएवं पुनः पुनः।
न काशी सदृशी मुक्तौ भूमिरन्या महीतले॥

अर्थात इस बात को बहुत ही सत्य मानो और मैं बार बार कहता हूं कि सारे संसार में मुक्ति पाने के लिये कोई स्थान काशी के समान नहीं है।

हे पढ़नेहारो फिर बिचार करो कि काशीखंड के २७ अध्याय में लिखा है।

श्लोकः। नास्ति गंगासमं तीर्थं कलिकल्मषनाशनम् ॥

जिस का अर्थ यह है कि इस युग अर्थात कलियुग में पाप के काटने के लिये गंगा सब से अच्छा तीर्थ है। फिर हे प्यारो विष्णु के विषय में जो सब से उत्तम तीर्थ और त्राणकर्त्ता कहलाता है यह लिखा है उत्कलखंड के ४ अध्याय में।

श्लोकः। पृथिव्यां यानि तीर्थानि गगने च त्रिविष्टपे।
सार्द्धत्रिकोटिसंख्यानि स्वर्गमुक्तिप्रदानि वै ॥
तेषामयं क्षेत्रराजः कीर्तितः पुरुषोत्तमः।
सर्वेषां क्षेत्रवर्गाणां अयं सायुज्यदं हरेः ॥

अर्थात पृथिवी में और आकाश में बैकुण्ठ में बरन साढ़े तीन कोटि

मुक्ति देनेवाले तीर्थों में विष्णु तीर्थ उत्तम और श्रेष्ठ है इस लिये और तीर्थों को त्यागके केवल इस ही को मानना चाहिये।

हे पढ़नेवालो ऐसो शिक्षा में कैसी बिरुद्धता है। कोई कहता कुछ कोई कहता कुछ। तुम किस को सत्य और किस को झूठ मानोगे। तुम्हारे शास्त्रों में एक दुसरे को झूठलाता है और ज्ञानवान यह निश्चय करेगा कि काशी जी किसी को न मुक्ति न धर्म्म न पवित्रता दे सक्ती है। इस से हम कहते हैं कि काशी पर धर्म्म का आसरा रखना अथवा झूठे महादेव को मुक्तिदाता कहना यह अति मूर्खता है। ऐसी अज्ञानता और ऐसी मिथ्या बातों को छोड़ दो और सत्य परमेश्वर की सेवा करके उसी सत्य शास्त्र का खोज करो जिसे उसने

पापियों के लिये मुक्ति का मार्ग ठहराया है नहीं तो पाप के कारण निःसन्देह सत्यानास होओगे ।

यह भी बड़ी सोचने की बात है कि यदि काशी के देखने से मन पवित्र हो जाय अथवा उस में जाने वा रहने से कोई पापी निस्तार और पाप मोचन पा सक्ता है तो तपस्या करने वा वैराग का धर्म्म पकड़ने का क्या प्रयोजन है ।

काशी के देखने से जो मन पवित्र हो जाय तो सन्यासी वा ब्रह्मचारी वा तपस्वी वा ऊर्द्धबाहु वा परमहंस वा जगतत्यागी वा बनबासी होने से क्या लाभ होगा ।

गुड़ खिलाये से जो मरे तो विष क्यों खिलावे ।

जो बिन घर छोड़े और बिन दुख उठाये कोई बात प्राप्त होवे तो घरबार छोड़ने और दुख उठाने से क्या काम निकलता। देखो बैरागियों के विषय में काशीखंड के २५ अध्याय में लिखा है।

श्लोकः। नमः स्वरूपाय तपोधनाय तपःफलानां प्रतिपादकाय।
सदा कुमाराय हि मारमारिणे ह्रीणोकृतः स्वर्गविरागिणे च॥

अर्थात् मैं उस तपस्वी का आदर मानता जिस ने अपनी तपस्या का फल पाया है इस लिये कि उसने जस सुख आनन्द को त्याग दिया है। फिर देखो काशीखंड के ४२ अध्याय में लिखा है।

श्लोकः। आत्मानं नापरं वेत्ति न शीतं नष्टमेव च।
समाधियुक्तो योगेन्द्रो न सुखं न सुखेतरम्॥

जिस का यह अर्थ है कि वह जोगी जो ध्यान में डूब गया है सो न आप को न औरों को पहचानता है वह न घाम न ठंढ को और न आनन्द न क्लेश को जानता है। तो हे प्यारो सोचो कि जो काशी के दर्शन किये तुम को मुक्ति मिले तो वैराग क्यों करते हो। प्रगट होता है कि तुम्हारे शास्त्र केवल भूल छल से भरे हुये हैं। फिर पूछो क्या उचित है कि लोग महादेव के समान जोगी बनें। जोगी कैसे हैं। सब को त्यागके वे जंगल पहाड़ में मारे फिरते हैं अथवा खोहों में रहते वा कठिन क्लेश उठाते हैं। परन्तु इस्से क्या हुआ। मन का काम क्रोध मद लोभ नहीं निकल गया है। जैसा किसी ने कहा है।

नख बिन कटा देखे शीस भारी जटा देखे जागी कनफटा देखे छार लाय तनमें ।
मौनी अनबोल देखे शेवड़ा सिर छोल देखे करत कलोल देखे बनखंडी बनमें ॥
बीर देखे शूर देखे सब गुनी और क्रूर देखे मयाके पूर देखे भूल रहे धनमें ।
आदि अन्त सुखी देखे जन्महो के दुखी देखे पर वे न देखे जिन के लोभ नाहि मनमें ॥

अपने घर बार कुटुम्ब परिवार से कोई भागे तो भागे पर अपने मन की दुष्टता और कुइच्छा से कोई भाग नहीं सक्ता। जब वैरियों की सेना नगर ही में है तो नगर के द्वारों को बन्द करने और पहरुये बैठाने से क्या होता है। जैसा किसी ने कहा है।

दोहा। नगर छोड़ जंगल बसे छूटत नहि जंजाल ।
मनुखन छाड़े का भयो मनही है चंडाल ॥

जोग बैराग से धर्म्म कर्म्म नहीं हो सक्ता है क्योंकि धर्म्म दो बातों से होता है एक यह कि हम सच्चे मन से परमेश्वर की सेवा श्रैार उपासना करना श्रैार सब देवताश्रों को छोड़के केवल उसही के भक्त होना श्रैार दूसरी यह कि जो काम मनुष्य के लिये उचित है सोही करना। तो क्या जोगी बैरागी लोग यह दोनों कर्म्म कर सक्ते हैं। कधी नहीं कर सक्ते हैं। परमेश्वर की सेवा करें तो करें परन्तु मनुष्य की भलाई कैसे करें। बनबासी होके श्रपने भाइयों श्रैार पड़ोसियों पर प्रेम कैसे दिखावें श्रैार जो कोई श्रैारों को बरन सकल मनुष्यों को प्यार नहीं करता श्रैार उनकी भलाई नहीं चाहता सो धर्म्मी नहीं ठहरेगा। हां परमेश्वर की सेवा भी कैसे करें क्योंकि जब तक कोई

परमेश्वर की आज्ञाओं को टालता रहे तब तक उस से सत्य सेवा कैसा होए ।

दोहा ।

जा घट प्रेम ना बसे ता घट जानु मसान ।
जैसे खाल लुहारके सांस लेत बिन प्राण ॥

इस लिये हम कहते कि जो लोग अपने सांसारिक काम काज को त्यागके जोगी बनते और परमेश्वर की आज्ञाओं को बिसारके अपने मन के भावना के समान करते हैं सो साधु नहीं बरन महापापी हैं । और महादेव जिस ने ऐसा बैराग किया सो अति अनुचित काम किया ।

दोहा। मूंड मुंड़ाये जटा बढ़ाये, मगन फिरे जस भैंसा।
खलड़ी ऊपर खाक लगाये, मन जैसे का तैसा॥

जब परमेश्वर ने घर बार स्त्री बालबच्चे मनुष्य को दिया क्या उसने भूल करके दिया। अथवा जो जोग बैराग को चुन लेते क्या वे ईश्वर से भी ज्ञानवान हो गये हैं। एक सिपाही जंगभूमि से भागके जंगल में जा छिपता है दूसरा सिपाही आज्ञा मानके लड़ाई में जाता और सूरमा के समान लड़ता है इन में से कौन राजा के साम्हने सूरबीर ठहरेगा। क्या वह भागनेवाले से प्रसन्न होगा अथवा लड़नेवाले से। धर्म्मी लोग सिपाही हैं क्योंकि वे अपने मन की बुराइयों से लड़ा करते हैं। भागवत पुराण में लिखा है।

श्लोकः। भयं प्रमत्तस्य बनेष्वपि स्यात् यतः स आस्ते सषट् सपत्नः।
जितेन्द्रियस्यात्मरतेर्बुधस्य गृहाश्रमं किं नु करोत्यवद्यम्॥

जिसका यह अर्थ है कि जो पुरुष काम क्रोध मद लोभ का दास होके चाहता है कि बन में भागके मैं इन से छूटूं सो बड़ा मूर्ख है क्योंकि काम क्रोध मद लोभ उस के संग बन में जाते हैं इस लिये यदि कोई पुरुष घर में बैठे बैठे अपने पापों को दबाता रहे तो उसको कौन दोषी कहेगा।

हे पढ़नेवालो जो जंगल में जाने से मनुष्य अच्छे हो जाएं तो चाहिये कि सब लोग बन में जा रहें। जो बन में रहने से मुक्ति होती है तो किसी को अपने घर में रहना उचित न होता। परन्तु जब सब

लोग नगर गांव को छोड़के बन में बसने लगे तो बन कहां रहा वह तो काशी के समान बसा हुआ। क्योंकि जहां लोग बसते हैं वही बस्ती है। काम क्रोध मद लोभ को त्यागना बहुत ही उचित है और परमेश्वर की सेवा करना चाहिये परन्तु जो लोग अपने घरानों को छोड़के और आलसी और निर्लज्ज होके इधर उधर बेकाम फिरते हैं सो बड़े पापी और अपराधी हैं तुम्हारे यहां लिखा है।

दोहा।

कहा भयो बन बन फिरो . जो बनि आयो नाहि।
बनते बनते बन गये . तुलसी घरही माहि॥

हे प्यारो हम ने तुम्हारे समझाने के लिये इतनी बातें लिखीं कि

कोई भूल करके यह न समझे कि काशी में रहने से अथवा बनबासी बैरागी होने से मैं पाप से निस्तार पा सकूं सो इन बातें पर सोचो और बिचार करो और धर्म्म का सत्य मार्ग खोज करो जिस्तें काल अचानक आके तुम को सत्यानास न करे।

दोहा।

पाव पल्क की सुध नहीं करे काल को साज।
काल अचानक मारिहै ज्यों तीतर को बाज॥
काचो काया मन अथिर थिर थिर काम करन्त।
ज्यों ज्यों नर निधरक फिरे त्यों त्यों काल हसन्त॥

फिर सोचो कि सत्य परमेश्वर सर्व्वज्ञ हैं अर्थात आदि से ले अंत

लों वह सब कुछ जानता है। जितनी बातें हुईं और हैं और जितनी होनेवाली हैं सब उस को प्रगट हैं। परन्तु शिव बड़ा अज्ञान था और होनेवाली बात को न जानता था। उस की अज्ञानता के विषय में अपने शास्त्रों से एक बात सुनो। किसी समय में वृक नाम एक राक्षसने शिव का भक्त होके उस की बड़ी पूजा और उपासना किई। पीछे वृक ने यह बात मांगी कि हे स्वामी मुझे यह शक्ति दे कि जिस किसी के सिर पर मैं अपना हाथ रक्खूं वह तुरन्त भसम होके राख का ढेर हो जाय। शिव ने कहा कि ऐसा ही हो। तब वह चला गया। तब वृक राक्षस ने नारद मुनि से पूछा कि मैं किस को नाश करूं और नारद जी के कहने से वह शिव ही के सिर पर हाथ रखने को गया।

शिव उस के भय से व्याकुल होके इधर उधर दौड़ने लगा और वृक हर कहीं उस के पीछे लगा रहता था। जब शिव अपने को बचा न सका तब नारायण ने बूढ़े ब्राह्मण का भेष लिया और वृक के सन्मुख खड़े होके कपट से कहा कि अरे वृक जान लो कि ब्रह्मा के स्राप से शिव का सामर्थ जाता रहा है कि वह किसी को शक्ति नहीं दे सक्ता है सो अपना हाथ शिव के सिर पर मत रक्खो बरन अपने सिर पर धरो और तुम को प्रगट होगा कि हमारी बात सत्य है। तिस पर वृक ने बहुत ही भोला होके और नारायण के झूठ से छल खाके अपना हाथ अपने सिर पर रखा और तुरंत भस्म होके राख का ढेर हो गया। सो शिव केवल नारायण की सहायता से बच गया।

हे पढ़नेवालो क्या वृक की कथा सुनके कोई शिव को सर्व्वज्ञानी ईश्वर कहेगा। कधी नहीं क्योंकि जो वह ईश्वर होता तो जान लेता कि इस शक्ति के देने से मुझे बड़ी जोखिम उठाना होगा और जो नारायण उस को न बचाता तो वह भस्म होने से न बचता। भला जो आप को न बचा सके तो तुम को कैसे बचावेगा। ऐसों को बचानेहार कहना बड़ी अज्ञानता है।

शिव के व्यभिचार के वर्णन में ॥

इस बात को भी बिचार करो कि परमेश्वर भ्रष्टाचार नहीं हो सक्ता है परन्तु शिव बड़ा कामातुर था जैसा हम अभी स्पष्ट रूप से प्रगट करते हैं। तुम्हारे ही शास्त्रों में लिखा है कि समुद्र मथने के समय

जब देवताओं ने अमृत निकाला तब नारायण ने मोहिनी की सूरत ले और असुरों को धोखा दे केवल देवताओं को अमृत पिलाया। जब नारायण मोहिनी के रूप में प्रगट हुआ तब शिव ने उसे भ्रष्ट करने को बहुत चाहा और यहां लों उसका पीछा किया कि नारायण ने अपने को शिव की कुइच्छा से बचाने के लिये उसके लिंग को काट डाला।

हे प्यारो अपने पापों के कटवाने के लिये हिन्दू लोग इस लज्जा की बस्तु को आज लों पूजा करते हैं और जो कोई काशी का तीर्थ करता सो मुक्ति के आसरे से उस के टुकड़े का दर्शन करता है। जैसे कहते हैं।

श्लोकः । अतिलिंगप्रभा वांछा मुक्तिरत्र सुनिश्चिता ।
मुख्यक्षेत्रमिदं काशी लिंगैर्यत्र महामुने ॥

हाय हाय। तुम्हारी बुद्धि पर। क्या ऐसे कामातुर की पूजा कर और उस के लिंग पर मुक्ति का भरोसा रख तुम्हें लाज नहीं होती है। निश्चय जानो कि ऐसे उपायों से तुम्हारे पाप और भी बढ़ते जाएंगे। सत्य जान कि घिनौनी बस्तुन की पूजा करने से तुम निःसन्देह सत्यानास होओगे। फिर यह भी सोचो कि शिव शूद्रों नीचों और निकम्मों की संगत में कुकर्म्म करता रहा यहां लों कि पार्व्वती सदा उस से झगड़ा करती थी। एक समय जब शिव ने किसी शूद्रनी के साथ व्यभिचार किया तब दुर्गा इस अपराध के कारण उस्से अति क्रोधित

हुई। फिर शिव के ऐसे एक दुष्कर्म्म के हेतु पार्व्वती ने अपने दोनो बेटों को समझाया कि शिव को मत छूओ। हाय हाय। यह कैसी अशुद्धता और निर्लज्जता की बातें हैं। ऐसे दुष्ट के मानने से तुम्हें क्या लाभ होगा। क्या तुम भलाई और बुराई का कुछ बिवेक नहीं कर सक्ते हो। क्या उन को जो चैतन्य जीव हैं यह उचित है कि जड़जीव पशुओं के समान कर्म्म करें। कभी उचित नहीं है।

शिव के मतवालेपन के विषय में।

हे पढ़नेवालो जैसा महादेव बड़ा कुकर्म्मी था वैसा वह बड़ा शराबी भी था। वह सदा गांजा और भांग और धतूरा पर मन लगाता रहा। यह बात सब लोग जानते हैं। मतवाला हो वह बारंबार

पृ० जंगलों और मरघटों में घूमता फिरता था। फिर शरीर पर मरघट की राख लगाये सांप लिपटाये मूंड माल पहिने मृगछाला बांधे डमरु हाथ साधे भांग धतूरा पीये लाल आंख किये हुये वह भयानक भेष भूतों का स्वामी कहाता है। सब जानते हैं कि मदोन्मत्त हो वह नंगा फिरता था। १६

अब हे प्यारो हम तुम से पूछते हैं क्या वह परमेश्वर जो सदा ज्ञान और मंगल का सोता है सो अपने को पागल और मतवाला बना सक्ता है। छोटे बालक भी जानते हैं कि ईश्वर पवित्र और निष्कलंक है और उस में पाप का दोष किसी रीति से नहीं लग सक्ता है क्योंकि वह बुराई का दण्ड देनेहारा है। जब कि यह बात ऐसी है तो

हे हिन्दू लोगो तुम क्यों इस मतवाला शिव को ईश्वर करके मानते हो। तुम काहे को ऐसे पापी पर अपनी मुक्ति का भरोसा रखते हो। यह मेरी समझ में नहीं आती है। हाय हाय। जो शिव आज कल इस हिन्दुस्तान में होता तो गांजा चरस अफ़ीम भांग सिद्धि धतूरा ताड़ी शराब इत्यादि अपने सेवकों के समान पीया करता और पशू की नाईं हो जाता। कहावत है कि।

जैसा गुरु तैसा चेला।

और वह पूरी भी होती है क्योंकि सन्यासी आदि लोग जो महा-देव के चेले हैं उस के अनुसार बहुत मदिरा पीते हैं। सुनो प्यारो परमेश्वर के पवित्र धर्म्मग्रन्थ में लिखा है कि कुकर्म्मी और शराबी

लोग कभी स्वर्ग के राज्य के अधिकारी न होवेंगे। तो शिव और उस के चेलों की क्या दशा होगी। तुम लोग आप ही इस बात का बिचार करो। और जो तुम मुक्ति के खोजी हो तो महादेव की सेवा को तज दो जो वृथा और निर्लाभ है और सत्य ईश्वर की सेवा करो जिस्से स्वर्गीय आनन्द प्राप्त होता है नहीं तो मरने के पीछे तुम को पछताने का अवसर न मिलेगा। अभी झूठ को छोड़के सत्य का पीछा करो और उसे पकड़के उस पर स्थिर रहो जिस्तें तुम सदा लों आनन्द में रहो॥

दोहा। सांचे स्राप न लागई सांचे काल न खाइ।
सांचे को सांचा मिले सांचे मांहि समाइ॥

शिव की पूजा के विषय में ।

शिव के पूजेरू शैव कहलाते हैं। और शैव लोग बिन शिव का मंत्र अर्थात होाङ्ग मंत्र पढ़े पानी नहीं पीते हैं। होाङ्ग मंत्र को छोड़ एक और नाम पहन यह है।

हौं ॐ नमः शिवाय हूं ।

और वे लोग जो शिव को नीलकंठ का नाम लेके पूजते हैं सो भी यह मंत्र पढ़ते हैं।

प्रों नॄ ठा ॐ नमः नीलकंठाय नमः ।

इस प्रकार के कई एक निरर्थ पद हैं जिन को पूजेरी नथनों में उंगली डालके बोलते जिस्तें अपनी अपनी इच्छा को पहुंचें और वे

समझते हैं कि ऐसी बुद्धि बिरुद्ध बातों के कहने से हमारे मनोरथ पूरे किये जावेंगे। फिर शिव का नाम बहुत श्रैार मंत्रों में जपा जाता है परन्तु हम इन सब पदों को यहां नहीं लिख सकते हैं न हो कि इस पुस्तक के पढ़नेवाले थकें श्रैार व्याकुल हो जाएं। परन्तु नीलकंठ के ध्यान को सुनिये।

नीलकंठ का ध्यान ।

बालार्कायुततेजसं धृतजटाजूटेन्दुखंडोज्ज्वलम्
नागेन्द्रः कृतशेखरं जपवटीं शूलं कपालं करो ।
खट्वांगं विधृतं त्रिनेत्रविलसत्पञ्चाननं सुंदरं
व्याघ्रत्वक्परिधानमब्जनिलयम् श्रीनीलकंठं भजे ॥

जिस का यह अर्थ है कि उस को जो बाला सूर्ज के समान तेजोमय है जटा जुट का रखनेवाला चन्द्रमा के खण्ड से जोड़े हुए सांप चुड़ावन नाम का जपनेवाला चोखा भाला का पकड़नेवाला त्रिशूल की नाईं उठाये हुये तीन आंख और पांच मुख संयुक्त अति सुन्दर देह का बाघ का खाल ओढ़े पदम पर बैठे हुये श्री नीलकंठ जो है उस को मैं भजता हूं। फिर शिव के ध्यान को पढ़ो।

श्रीशिवका ध्यान। ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नं
पद्मासीनं समंतात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम्
विश्वाद्यं विश्ववेद्यं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रं ॥

जिस का यह अर्थ है कि उस महेश का ध्यान नित करो जो रुम्यावरन पर्व्वत की नाईं है जिस का सिर सुन्दर चांद से शोभित किया जाता है रत्न समान जिस के अंग झलकते हुए हैं जिस के हाथ में बाघ डरानेवाले फारसा नित रहता है जो सदा प्रसन्न होता और पदम पर बिठाये देवतों से स्तुति किये गये जिस का आसन बाघ के खाल का बना हुआ जगत का आदि और भय का हरनेवाला पांच मुख और तीन आंख का रखनेवाला है ॥

हे प्यारे लोगो शिव के ध्यान के पढ़ने से कदाचित कोई समझे कि शिव ही महा ईश्वर और सब कुछ है और उस के समान कोई नहीं है। परन्तु जिस किसी देवी वा देवता का वृत्तान्त तुम पढ़ो सभों की

ऐसी ही स्तुति है। हर एक अपने अपने इष्टदेव को महा प्रभु और परमात्मा करके मानता है। इस लिये हम तुम से पूछते हैं कि बुद्धिमान किस को सच्चा परमेश्वर समझेगा। तुम किस पर मुक्ति का भरोसा रक्खोगे। शास्त्र पुराणों में देखो अथवा गुरुओं से पूछो सब ही ईश्वर कहलाते हैं। एक उन में से जो चुन करके भजो तो क्या और सब क्रोधित न होवेंगे। हाय हाय। तुम कहां लों ऐसे भर्म्मसागर में डूबते रहोगे। कहां लों ऐसे शास्त्रों को मानोगे जिन में एक दूसरे को खण्डन करता है और उन देवताओं को जिनका वृत्तान्त इन झूठे शास्त्रों में लिखा है। जब शास्त्र बेठिकाने हैं तो देवते कहां रहे। जब जड़ नहीं तब पेड़ कहां।

हे प्यारो जब लों अवसर है तब लों सच्चे धर्म्म का खोज करो नहीं तो तुम निश्चय नाश होगे। फिर हिन्दू लोग पुरुष और स्त्री दोनों निर्लज्ज होके महादेव के लिंग को मट्टी से बनाके पूजते हैं और लिंग के बनाने और स्थापन करने के लिये ऐसे मंत्र होते हैं।

शिवलिंग गठनमंत्र।

हराय नमः इति मृदाहरणम्।

महेश्वराय नमः इति शरकरा तुषादि रहित संघट्टनम्।

पशुपतये नमः इति वज्राय फट्॥

प्राणप्रतिष्ठामंत्र।

नमः शूलपाणे पिनाकधृक्।

इहागच्छ२ इह तिष्ठ इह तिष्ठ इह सन्निहितो भव सुप्रतिष्ठितो भव मम
इतां पूजां गृहाण अत्राधिष्ठानं कुरु ॥

योंही इस बुरी और कुरूप मूरत को बनाके वे उस को पूजते हैं और स्त्री पुरुष लज्जा के मुख पर राख डाल और अपनी अंगुलिओं से एक कुरूप प्रतिमा को जिसे महामुद्रा कहते हैं लिंग के सन्मुख दिखाते हैं। महामुद्रा बनाने की यह रीति है।

योनिमुद्राविधि यथा।

रसानां सोधनं सम्यक् महामुद्रा विधीयते।
योनिं वामांघ्रिना पीड़ां कृत्वा वक्षस्थले हनुं ॥

काशीखंड ४५ अध्याय।

इस के पीछे शिव की स्तुति पढ़ते हैं। शिव की प्रशंसा में वे बहुतेरी और अति बड़ी बातें सुनाते हैं परन्तु उन्हें इस पुस्तक में लिखना उचित नहीं है केवल शिव के प्रणाम को लिखते हैं अर्थात्

शिव का प्रणाम यथा।

नमस्ते भयांग विरूपाक्ष नमस्ते दिव्यचक्षुषे ।
नमः पिनाकहस्ताय बज्रहस्ताय ते नमः ॥
नमस्ते शूलहस्ताय दंडपाशासिपाणये ।
नमस्ते लोकनाथाय भूतांगपतये नमः ॥

हाय हाय। शिव के ऐसे प्रणाम को पढ़ते यह समझ में आता है कि महादेव कोई बड़ा अहेरी हुआ होगा और कभी यह न समझेंगे

कि वह परमेश्वर है परन्तु हिन्दु लोग इस शिव को परमेश्वर करके सच्चे ईश्वर का अनादर करते हैं।

हे प्यारो अब मैं उस सच्चे परमेश्वर का जो परमात्मा और जगत का मुक्तिदाता है वर्णन करता हूं सो तुम चित दे कान लगाके सुनो और उस के शरणागत हो जिस्तें अपने पापों से छूटके अनंत जीवन के अधिकारी होओ॥

सत्य ईश्वर और सत्य निस्तार का वर्णन।

अलख अगोचर अखल गति. अजर अमर अविकार।
अटल अकाम अनादि अज. जगपालक करतार॥
रसना एक अनेक गुण. कहांलग करूं बखान।
मो अति दीन मलीन पर. द्रवङ्ग सुकृपा निधान॥

पृ० इस बात के निश्चय करो कि जो सच मुच परमेश्वर है सो सृजन-हार है परन्तु शिव ने कभी सृष्टि को नहीं रचा। परमेश्वर सर्वसामर्थी अन्तरजामी कृपानिधान है। पर शिव में इन गुणों का कोई लक्षण देख नहीं पड़ता है। फिर बिचार करो कि परमेश्वर हर कहीं है और हम उस की आराधना हर कहीं कर सकते हैं। परन्तु शिव के दर्शन करने के लिये काशी आदि स्थलों को जाना अवश्य है। मुक्ति किसी स्थान में होने से नहीं है पर जो धर्म्म के कार्य्य नहीं किया करते हैं उन की मुक्ति नहीं होने की परन्तु लोग कहते हैं कि दुष्ट भी जो काशी में मरे झट बैकुंठ को जायेगा। फिर परमेश्वर महा पवित्र और शुद्ध है परन्तु शिव अति अपवित्र और बड़ा अपराधी

था। परमेश्वर सब कुछ जानता ओर पहचान्ता है परन्तु शिव की अज्ञानता बहुत बातों में प्रगट हुई। इस लिये हे हिन्दु लोगो हम तुम से पूछते हैं कि तुम कब लों दृथा ही शिव की निर्लाभ पूजा करोगे। शिव ने तुम्हारे पापों के कटवाने के लिये कोई बलिदान नहीं किया है। वह आप पापी होके किस रीति ओरों के पापों को दूर कर सकता। सो हम तुम से बिनती करते हैं कि उसके आश्रय को छोड़के संसार का मुक्तिदाता प्रभु ईसा को जो परमेश्वर का पुत्र है भजो। उस ही पर भरोसा रखने से तुम को मुक्ति मिलेगी।

धर्म्मग्रन्थ में लिखा है कि जब समय पूरा हुआ तब ईश्वर ने मनुष्य पर दया कर अपने कोमल ओर निष्कलंक पुत्र को भेजा जिस्तें

मू० मनुष्यों को जो पाप सागर में डूबते हैं निकाले। प्रभु ईसा मसीह अद्भुत रीति से स्त्री से जन्मा और इस पातकी संसार में अवतार लिया। उस ने पापियों को शिक्षा दिई कि ईश्वर से कैसे मेल करें और स्वर्गबासी कैसे बनें। ईसा ने आप कहा है मैं ही मार्ग और जीवन हूं। बिना मेरे द्वारा से कोई पिता पास नहीं पहुंचता है। उस ने यह भी कहा है कि पवित्रता के बिना कोई स्वर्ग का अधिकारी न हो सकेगा। वह यह भी कहता कि वे जो कुकर्म्मी और मतवाले और झूठे और मूरतपूजक लोग हैं सो जब लों इन कामों से न पछतावें कभी मुक्ति न पावेंगे। उस ने यह भी कहा है कि परमेश्वर की सेवा के लिये कहीं जाना कुछ अवश्य नहीं है। परन्तु हम हर एक जगह

श्रीर हर एक दशा में पवित्रात्मा की सहायता से परमेश्वर को पा सकते हैं क्योंकि वह आत्मा है श्रीर वह किसी स्थान से दूर नहीं है। फिर प्रभु ईसा ने कहा है कि केवल वे ही जो दयावन्त श्रीर नम्र श्रीर मन में पवित्र श्रीर दीन हैं सो परमेश्वर को देखेंगे। वह बहुत दिन लों ऐसा उपदेश देता रहा श्रीर इस के पीछे उसने पापियों के निस्तार के लिये धर्म्म का महाकार्य्य भी किया अर्थात् उसने मनुष्यों का जामिन श्रीर बिचवाई होके परमेश्वर की सारी व्यवस्था को सम्पूर्ण रीति से पूरा किया श्रीर पाप का भारी दंड भी उठाया जिस को जो हम आप उठाते तो हम घोर नरक में डूब जाते। वह मारा गया कि हम दण्ड से बचें। इस लिये जो कोई पापी अपनी दुष्टता से पछताके

प्रभु ईसा पर बिश्वास करता है सो उस के द्वारा बिना मोल पाप के दण्ड से ओर घोर नरक की पीड़ा से निस्तार पाता है।

भजन। जग में कभु आंसू कभु हांसी. सागर जस लहराहीं।
या भवसिंधु बीच बहुतेरे. मुक्ति रतन बिसराहीं॥
सोचहु मन या चंचल जग में. कैान दयाल बचाही।
दीनदयाल कृपानिधि यीशु. जोखिम पार लगाही॥
सत बिश्वासहु लंगर जानो. खीष्ट तीर ठहराहीं।
दास सदा लैालीन रहो तुम. तो कछु शंका नाहीं॥

हे पढ़नेवालो बिचार करो। क्या प्रभु ईसा के समान पापिओं का कोई मित्र है? कहीं नहीं। इस लिये लिखा है कि प्रभु ईसा मसीह

के नाम को छोड़ स्वर्ग के नीचे कोई दूसरा नाम नहीं है जिस से कोई पापी मनुष्य त्राण पावे और उस महागुरु का बचन यह है कि जो कोई पापी मेरा शरणागत होता और मुझ पर अपना सारा भरोसा रखता और मेरा शिष्य होता है उस जन को मैं अपना धर्म्मात्मा देऊंगा जिस्तें उसका दुष्ट सुभाव धीरे धीरे फिर जाय और वह नया सुभाव पावे और तब वह ऐसे कर्म्म कर सकेगा जिन से ईश्वर प्रसन्न हो।

दोहा।

पाछली चलन बिसारो क्षण में होत नवीन।
धर्मात्म मनो आईके चाल सब पवित्र कीन॥

जैसे मसीह के सत्य बलिदान के द्वारा हम अपने पापें के दण्ड से छुटकारा पाते वैसेही धर्म्मात्मा की सहायता से हम पाप के बल से श्रार बुराई करने की इच्छा से निस्तार पाते हैं श्रार यें क्रम क्रम से मनुष्य ईश्वर के समान धर्म्मी श्रार पवित्र होने चाहता श्रार यत्न करता है श्रार ऐसा करना अति अवश्य है क्योंकि मन की पवित्रता के बिना कोई मनुष्य परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर के अनन्त जीवन का अधिकारी नहीं हो सकेगा।

निदान हे पढ़नेहारो शिव की वृथा सेवा के छोड़ने में बिलम्ब न करो। उस प्रभु ईसा मुक्तिदाता पर बिश्वास करो जो करुणानिधान श्रार पतितपावन है क्योंकि इस से महामुक्ति प्राप्ति होती है। इस

बात को बिचार करो कि प्रभु ईसा को छोड़के कोई अवतार तुम्हारे मुक्ति के कारण कभी नहीं हुआ न होगा। और जो तुम ऐसे सामर्थी गुरु को तुच्छ जानो तो इस पापसागर से तुम को कौन निकालेगा। इस लिये हे पढ़नेहारो हमारी बिन्ती सुन। देखो काल डरावना मुख खोले हुए निकट आन पहुंचा है। कोई नहीं जानता कि वह किस समय तुम को पकड़के खा जायगा। इस लिये प्रभु ईसा का चेला अभी होना चाहिये।

दोहा। काल बितीत ऊ होत है जन्म बीतह्व व्यर्थ।
जीवन जग में थोड़ा अब मुक्त मांग यही अर्थ॥

धर्म्मग्रन्थ में लिखा है कि आज तुम ईश्वर का शब्द सुनो तो

अपनें मन कठोर मत करो। हे मित्रो तुम्हारी दशा कैसी ही क्यां न हो ईसा पास आवो उसकी शरणागत हो तो तुम को मुक्ति मिलेगी। और जो प्यासा हो सो आवे और जो चाहे सो जीवन का जल सेंत मोल लेवे। देखो मरने के पीछे पछताने का औसर न रहेगा। सो अभी करो जो करना है। परमेश्वर से बिन्ती करो कि वह तुम्हें अपने आत्मा का दान दे और तुम्हारा बिश्वास प्रभु ईसा पर स्थिर करो। जितनी बुराइयां तुम ने किई हों उन सब से पश्चात्ताप करो और उस दयासागर से उन की क्षमा मांगो जिस्तें महाबिचार के दिन निष्पाप ठहरो। प्रभु ईसा ने तुम्हारे लिये मुक्ति कमाई है इस लिये अपना सारा आस उस पर धरो।

दोहा ।

सरग छाड़ नर जन्म लीन्हो , पापी उधारन पार ।
मातु पिता सुत बंधू बनिता , जात कुल धन परिवार ॥
ज्ञान ध्यान पुन तप तिहारे , इनतें नहीं निस्तार ।
तिहि त्याग यिशु शरन गहो तुम, इहि तें जीवन अपार॥

॥०॥ शिवपरीक्षा समाप्ता ॥०॥

SHIV TESTED.

LIBRARY OF CONGRESS
0 009 620 485 1

यीशु मसीह मेरो प्रान बचैया ॥

जो पापी यीशू कने आवे . यीशू है वाकी मुक्ति करैया ॥
यीशु मसीहकी मैं बलि बलि जैहूं. यीशू है मेरो त्रान करैया ॥
गहिरी वह नदिया नाव पुरानी . यीशू है मेरो पार करैया ॥
दीननाथ अनाथ के बन्धू . तम ही हो प्रभु पाप हरैया ॥
आसीको अपनी शरन में रखियो . अंत समै मेरी लीजे खबरिया ॥